

तैं जकरा अहां समस्या कहैत छी, ओ महत्वपूर्ण अछि। ओ ओहि दिन धरि महत्वपूर्ण रहैत अछि जखन ओ आब महत्वपूर्ण नहि रहैत अछि। आ जाहि दिन ओ आब कोनो मायने नहि रखैत अछि ओ दिन अछि जे अहाँ स्वयं ओकर कारण आ कारणकें नष्ट करबामे सफल होयब। आ समस्यासभक विनाश पूर्ण रूपसँ अहाँक इच्छाशक्तिसँ जुड़ल अछि, अहाँक इच्छाशक्तिक ऊर्जाकें अहाँक जीवनक भौतिक तल पर उतारबाक क्षमतासँ जुड़ल अछि।

आ नव निर्देशमे सबसँ बेसी गुप्त बात ई अछि जे मनुष्यक इच्छा ओ नहि अछि जे अतीतमे छल। अतीतमे, प्राचीन जातिमे, मनुष्यक इच्छा ओकर स्वार्थी इच्छाक प्रत्यक्ष उपज छल, जखन कि भविष्यमे मनुष्यक इच्छा ओकर कष्ट आ आत्माक इच्छाक बीच संघर्षक उपज अछि जे दुःखक स्थितिकें स्थापित करैत अछि।

आ जखन मनुष्य अपन भीतर एहि कष्टक सीमा या सीमाक आवश्यकताकें महसूस करबाक लेल पर्याप्त कष्ट भोगलक अछि, तखन ओ अपन भीतर ई ऊर्जा उतारि दैत अछि जे ओकर अपन इच्छा बनि जाइत अछि आ ओहि क्षण मनुष्यकें आत्माक इच्छासँ लाभ होइत अछि आ ई ओहि क्षण अछि जे ओ ओ सभ परिस्थितिकें नष्ट कऽ सकैत अछि जे अतीतमे ओकरा भीतर समस्या उत्पन्न करबाक काज करैत छल।

हम अहाँकें सलाह दैत छी जे अहाँक जीवनक सभ समस्या ओकर सभ पहलूमे, ओकर सभ परिस्थितिमे, अहाँक भीतर उच्च बुद्धिमत्ता द्वारा उत्पन्न कयल गेल अछि। अहाँक विकासक लेल, काहिक आदमीक लेल, ई खेल जरूर रोकबाक चाही; हुनक भीतरक बुद्धि, ओ इच्छा जकर शक्ति ओ नहि जनैत अछि, ओकरा अपनाकें सन्तुलित करबाक चाही, जाहिसँ कोनो बिन्दुपर, अपन बढ़ैत जीवनमे, चेतनाक जीवनमे, ओ अपन मनपर आत्माक शक्तिकें शून्य तक कम कऽ दैत छथि।

आ जखन मनुष्यक लग पर्याप्त स्वैच्छिक शक्ति, वास्तविक इच्छाशक्ति होइत छैक, तखन ओ अपन मनपर आत्माक शक्तिकें शून्य तक कम करबामे सक्षम होइत छैक, आ तखन मनुष्य सुपरमैन बनि जाइत छैक।

एहि व्याख्याक रूपरेखाक भीतर, हम समस्यासभक घटनाकें देखि सकैत छी, एकरा समझक उच्च स्तरपर लऽ जा सकैत छी, एहि अर्थमे जे हम एहि अनुभवसँ समाप्त कऽ सकैत छी, मौका कारक, अपनाकें एहि तथ्यमे निर्देश दऽ सकैत छी जे एहि अनुभवमे, हमरासभमे जे कमी छल ओ पीड़ासँ उत्पन्न बुद्धिमत्ता छल जे हमरासभकें अपन वास्तविक इच्छाकें जीयबासँ रोकि देलक। किएकि एक बेर फेर हमर इच्छा आत्मा आ आत्मक बीच संघर्षक उपज नहि रहल छल।

आ ई निर्देश, जे मनुष्य आइ प्राप्त कऽ रहल अछि, पृथ्वी ग्रह पर पूर्णतः नव अछि, किएक तँ एहि सँ पहिने कहियो कोनो मनुष्य ग्रह पर आरम्भक रूपमे कोनो जनादेशक रूपरेखाक भीतर मनुष्यक मनक भावनापर आत्माक शक्तिकें पूर्ण रूपसँ नष्ट करबामे सक्षम नहि छल, नहि चाहैत छल, आ ने वाँछित छल।

आ एहि अनुभवमे ई निर्णय कयल गेल जे मनुष्यक भावनाक भावनासँ अपनाकें मुक्त करबाक लेल मनुष्यकें आत्माक भावनाकें संलयनक माध्यमसँ परिवर्तित करबाक लेल स्थायी रूपसँ आत्माक जुआसँ गुजरय पड़त। आ जखन आत्माक भावना परिवर्तित भऽ गेल, तखन मनुष्य आब नश्वर नहि छल, अपितु अमर छल। आ जखन मनुष्य अमरक क्षेत्रमे रहैत अछि तखन ओ आब आत्माक नियमक अधीन नहि रहैत अछि, किएक तँ ओ स्वयं पदार्थमे आत्मा अछि।

ई बुझबाक महत्व जे अहाँक जीवनमे एक दिन समस्यासभकें पूर्ण रूपसँ रोकल जयबाक चाही, निष्प्रभावी कयल जयबाक चाही, नष्ट कयल जयबाक चाही, जड़ि पकड़बासँ रोकल जयबाक चाही।

आ अहाँक रोजमर्रा के अनुभव के निरंतर अभिव्यक्ति में, जतय समस्या उत्पन्न होइत अछि, बायां आ दायाँ, एकटा अचेतन सभ्यता के संबंध मे, अचेतन पुरुष, आत्मा के लेल एकटा बहुत विशाल भूभाग अछि जाहि मे अहाँ, एक व्यक्ति के रूप मे, एकटा मन के रूप मे, इच्छा सेहो रखैत छी, परेम आ बुद्धि सेहो रखैत छी, अहाँके कोनो बिंदु पर एहसास करय लेल मजबूर कैल जायत अछि जे ऊपर सँ शक्ति वास्तविकता के उप-तल मे उतरबाक चाही आ एक बेर आ लेल टूटबाक चाही। सब, अंतिम रूप सं, कर्म के जंजीर।

मनुष्यकें आब कष्ट नहि भोगबाक चाही, मनुष्य आब कष्ट नहि भोगत, मुदा मनुष्य, जे आब कष्ट नहि भोगत, ओ ओहि संघर्षमे पहिने सँ पीड़ित होयत जे ओकरा आ आत्माक बीच अवश्य होयबाक चाही। आ ई अभिव्यक्ति अछि, हुनक रोजमर्रा के वास्तविकतामे, जे हम जनैत छी ओकर अनुभव ओ करत।

आ जे हम जे जनैत छी ओकर अनुभव कयने छथि, ओ बुझि गेल छथि जे हम जनैत छी आ बुझि गेल छथि जे ओ जे बुझने छथि ओ एकदम सही अछि। किएक तँ काहिक मनुष्य आब पाँचम जातिक नहि अछि, आ आत्माक नियम जे पाँचम जातिपर लागू होइत अछि ओ आब हुनका पर लागू नहि होयत। तँ काहिक आदमीकें जीवनकें ओल्ड मैनसँ एकदम अलग तरीकासँ बुझबाक चाही।

आ जखन हम कहैत छी जे काहिक आदमीकें जीवनकें ओल्ड मैनसँ एकदम भिन्न, पूर्णतः नव तरीकासँ बुझबाक चाही, तखन हमर मतलब ठीक-ठीक इएह अछि। जाहिसँ परशिक्षतामे, संकरमणमे, आजुक आदमीकें पाछू मुड़ि नहि देखब सीखबाक चाही, अथवा अलग-अलग शब्दमे, काहिक आदमीकें बूढ़ आदमीकें पाछू मुड़ि नहि देखब सीखबाक चाही।

काहिक मनुष्यकें काहिक जीवन, आइ जीबय सीखबाक चाही, आ आब अपन जीवन नहि जीबय चाही, आइ, जे हुनक काहिक स्वभावक आधार पर छल। आ ई स्थिति पूर्ण अछि आ काहिक आदमी द्वारा जीयत जायत। आ काहिक पुरुष, जे एहि परिस्थितिसभकें जीबैत रहत आ एहि नव परिस्थितिक नियमकें बुझने होयत, हुनका लग अपन भौतिक पदार्थकें अमर करबाक शक्ति होयत।

जँ अहाँ लग ओकरा नष्ट करबाक दृष्टि अछि तँ अहाँ लग पहिनेसँ ओकरा पार करबाक दृष्टि अछि। जँ अहाँ लग पहिनेसँ

ओकरा नष्ट करबाक दृष्टि अछि तँ अहाँक लग अपन प्रकृतिकें पार करबाक दृष्टि अछि। मुदा पहिने अहाँकेँ भीतर सँ देखबाक चाही, किएक तँ ई दृष्टि मनोवैज्ञानिक दृष्टि नहि अछि, ई दृष्टि अपन भीतर एकटा शक्तिशाली बोध अछि, अपन भीतर आत्मकेन्द्रित अछि, जे एहि तथ्यक परिणामस्वरूप होइत अछि जे अपन जीवनक कोनो बिन्दु पर अहाँ पुरान जीवनक बेतुकापनकेँ अनुभव कयने छी।

आ एक बेर जखन अहाँ पुरान जीवनशैलीक बेतुकापनकेँ अनुभव कऽ लेब तखन अहाँ हमरा जकाँ भऽ जाएब, अकेला, एकांकी, केवल आत्मा मे ओही आत्माक सङ्ग जुड़ल रहब, आ कोनो स्थितिक लेल तैयार, अर्थात् कोनो स्पन्दन प्राप्त करबाक लेल तैयार, जे अदृश्यक शक्तिसभक सङ्ग सम्पर्क करबाक आ काज करबाक लेल आवश्यक ऊर्जाकेँ स्वयं मे जागृत करबाक चाही।

तँ आजुक समस्या, हर दिनक समस्या अहाँक कल्पनासँ बहुत पैघ अछि, मुदा जँ अहाँ नव कानूनकेँ नहि जनैत छी तँ ओ पैघ अछि।

जँ अहाँ नव कानूनकेँ नहि जनैत छी जे आब कोनो मायने नहि रखैत अछि, तखन ओ कोनो मायने नहि रखैत अछि, तँ ओ मात्र एकटा जुआ, उपद्रव अछि, जाहिसँ अहाँ अपन शेष जीवन धरि जीबि सकैत छी।

मुदा जँ अहाँ नव कानून के जनैत छी आ नव कानून के लागू करैत छी तऽ अहाँ अपन आस-पास जीवन के निर्माण के तरीका के नष्ट कऽ देब आ कने-कने अहाँ एकदम नव जीवन जीबय लगब, हम नव नहि कहैत छी, कियेकि नव जीवन आ एकदम नव जीवन मे अंतर अछि। नव जीवन ओ अछि जे पुरान जीवनमे बदलि गेल अछि। एकदम नव जीवन एकटा एहन जीवन अछि जकर पुरान जीवनसँ कोनो लेना-देना नहि अछि।

आ जखन मनुष्य एकदम नव जीवन जीबैत अछि तखन ओ नव जीवनक सदस्यता लेबामे असमर्थ होइत अछि, किएक तँ दुनूक बीच रूपक अन्तरक भ्रम पुरान जीवन जकाँ पैघ अछि, नव जीवनक लेल।

मुदा जखन मनुष्य एकदम नव जीवन जीबैत अछि तखन ओ पूर्णतः दोसर समयमे रहैत अछि, आ ओकरा अपन अतिरिक्त कोनो चीजपर कोनो अधिकार नहि छैक।

आ जखन मनुष्यकेँ एहसास होइत अछि जे ओकरा अपन अतिरिक्त कोनो चीजपर कोनो अधिकार नहि अछि, तखन ओ एकदम नव जीवनक निरपेक्ष परिस्थितिक अनुभव करैत अछि, आ ई बुद्धि आ बुद्धिक माध्यमसँ नहि अछि जे ओ एहि जीवनकेँ जीबि सकैत अछि आ एकरा बुझि सकैत अछि, ई ओकर भीतरक कम्पनक माध्यमसँ अछि, जे ओकर मन, ओकर भावना, ओकर महत्वपूर्ण आ ओकर सामग्रीकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

एकदम नव जीवन एकदम नव जीवन अछि, ई एकटा एहन जीवन अछि जे अहाँक नहि अछि, ई एकटा जीवन अछि जे परकिरिया अछि, ओ परिणाम अछि, ओ अहाँक भीतर ऊर्जाक अभिव्यक्ति अछि, जे अहाँक भीतर के शक्ति द्वारा निर्धारित अछि। एकदम नव जीवनमे, अहंकार नहि देखल जाइत अछि, वा कम-कम देखल जाइत अछि; एकदम नव जीवन मे, व्यक्तित्व महसूस नहि होइत अछि, या कम सँ कम महसूस होइत अछि; एकदम नव जीवन मे केवल आत्मा अहंकार के संग कम्पन सामंजस्य मे विद्यमान अछि, जे व्यक्तित्व के संग कम्पन सामंजस्य मे अछि, जाहि सँ एकटा अक्ष बनैत अछि, आ एहि अक्ष के माध्यम सँ किरण धारा के ऊर्जा गुजरैत अछि जकरा अहाँ सौंपल गेल छी, आ ई एहि ऊर्जा सँ अछि जे अहाँ जीबैत छी; इ इ ऊर्जा अछि जकरा अहाँ भोजन करैत छी। ई ई ऊर्जा अछि जकर उपयोग अहाँ पदार्थ, ईश्वरक आत्मा मे उतरबाक लेल करैत छी।

आ जखन एकदम नव जीवनमे मनुष्य पदार्थमे उतरैत अछि, ईश्वरक आत्मा: कोनो आत्मा जे एकर विरुद्ध अछि, आ कोनो आत्मा जे एहि आत्माक प्रकाशक विरुद्ध अछि, ओहि स्थानमे प्रवेश नहि कऽ सकैत अछि जतय ई मनुष्य विकसित होइत अछि आ प्रगति करैत अछि, किएक तँ ई स्थान अलंघनीय अछि, किएक तँ ई स्थान प्रकाश अछि।

तँ हम अहाँकेँ सरल, रोजमर्रा के बात समझा रहल छी: हम समस्याक बारे मे बात कऽ रहल छी, आ हम अहाँकेँ समस्याक महत्व के बुझयबाक कोशिश कऽ रहल छी, अहाँकेँ एकटा एहन परिप्रेक्ष्य देबाक लेल जे मानव नहि अछि, बल्कि आत्माक नियमक वास्तविकता के प्रति पूर्ण जागरुकताक परिणाम अछि।

जखन हम कहैत छी, कुल्हाड़ी लगाउ एकर अर्थ अछि कष्टक कारणकेँ नष्ट करू, ई एहि नियमकेँ व्यक्त करबाक एकटा तरीका अछि, मुदा कतेको लोक, अनुभवक अभावमे आरम्भसँ कुल्हाड़ी लगा कऽ अपन अंगुरी काटि लेने छथि, मुदा ई अनुभवक हिस्सा अछि, आ अनुभवक सङ्ग अहाँ कुल्हाड़ीकेँ भीतर राखब सीखैत छी आ ककरो अंगुरी नहि काटि दैत छी।

चेतना रचनात्मक अछि, विनाशकारी नहि; चेतना सद्भाव अछि। रोजमर्रा के समस्या, अहाँक समस्या, भ्रम छैक, जे अहाँक भीतर के मन द्वारा बनाओल गेल छैक, अहाँकेँ अपन भावनाक धारा मे घुमाबय लेल, आ ट्राउट जकाँ, अहाँ अपन समय घूमैत बिताबैत छी।

जखन हम कहैत छी जे काल्हिक मनुष्य अपन नहि होयत, तखन हम प्राचीन मनुष्यक लेल अज्ञात सबसँ पैघ सत्यमे सँ एक बाजि रहल छी। काल्हिक आदमी अपन नहि होयत, आ पहिनेसँ अहाँक अनुभवमे, अहाँकेँ एहन क्षण आयल अछि जखन अहाँकेँ लागल अछि जे अहाँ अपन नहि छी, आ ई जागरुकता बहुत पैघ अछि आ ई बेसी सँ बेसी भऽ रहल अछि।

आ ई तखन होइत अछि जखन हम आब अपन नहि रहैत छी तखन हम अपन बारे मे नीक अनुभव करैत छी; जाबत धरि हम अपन छी, हम अपन त्वचा पर कील लगा दैत छी, मुदा जखन हम आब अपन नहि छी, तखन हम अपना बारे मे नीक अनुभव करैत छी। परंच अहंकार ओ नहि चाहैत अछि, किएक तँ अहंकारकेँ ई सुनिश्चित करबाक आवश्यकता अछि जे ई मनमे विद्यमान अछि, ओ भावनामे अनुभव करैत अछि, जे ओ सामग्रीमे रहैत अछि; अहंकार के ई सुनिश्चित करबाक जरूरत अछि

जे ओ जीवित अछि। पत्नीकेँ ई सुनिश्चित करबाक आवश्यकता अछि जे ओकर पति हुनका सँ परेम करैत छथि, पुरुषकेँ ई सुनिश्चित करबाक आवश्यकता अछि जे ओकर पत्नी वफादार छथि; हमरा सुनिश्चित करबाक जरूरत अछि, मुदा ई सुरक्षा अल्पकालिक अछि।

मुदा जखन दूटा प्राणी जीवनमे जीबैत अछि आ एकटा अपन नहि अछि आ दोसर अपन नहि अछि, तखन नहि एकटा दोसरक अछि, आ जखन कोनो पुरुष आब अपन पत्नीक नहि अछि आ ओकर पत्नी आब ओकर नहि अछि, तखन ओकरा आब कब्जाक कष्ट नहि रहैत अछि। जखन बच्चा सभ आब हमरासभक नहि रहैत अछि, तखन हमसभ कब्जाक पीड़ा नहि सहैत छी।

हम जे कहैत छी ओ स्पन्दनमे अछि, मनोवैज्ञानिक समझक रूपमे नहि। जे शब्दमे व्यक्त करब कठिन अछि ओ अछि स्पन्दनक वास्तविकता। जे शब्दमे व्यक्त करब आसान अछि ओ अछि रूप।

ताहि लेल हम कहियो नहि कहैत छी जे हम कहय चाहैत छी, ई हम नहि कहि सकैत छी जे हम कहय चाहैत छी, मुदा हमरा मे ई कहबाक शक्ति अछि, किएक तँ हमरा मे स्पन्दनक शक्ति अछि। तँ रूपमे कूदि कऽ अपन चौंच तोड़ि फसल बनबासँ पहिने कपन ओहि शब्दकेँ बुझबाक प्रतीक्षा करू जाहिमे ई सम्मिलित अछि।

सब किछु कहल जा सकैत अछि, जे बुझल नहि जा सकैत अछि, ई मात्र एकटा निश्चित तरीकासँ कहबाक प्रश्न अछि। आ हम चाहैत छी जे अहाँ सभ एक दिन आब अपन नहि रहब, आब अपना के महसूस नहि करू, आब अपना के नहि देखब, आब ई नहि जानब जे अहाँक \ "मैं" \ की अछि, आब ई नहि जनैत छी जे अहाँक \ "अहंकार" \ की अछि, हम अहाँकेँ ओ सब शुभकामना दैत छी। मुदा जा धरि ओ दिन नहि आबि जाए, जानि लिय जे अहाँ धीरे-धीरे एहि दिस बढ़ि रहल छी। आ पछिला किछु वर्षमे हम अहाँकेँ जे किछु कहैत छी ओ अहाँकेँ एहि वास्तविकताक बारीकीकेँ नीक आ नीक जकाँ बुझयबाक काज करत।

हमरासभक ई धारणा छैक, पृथ्वीक पुरुष, जे अपन जीवनक कोनो क्षणमे, हम अपन जीवनमे कतहु स्थित भऽ सकैत छी, जे ई आभास एतेक प्रबल अछि जे ई हमरासभक भीतर एकटा ऊर्जा, एकटा भावना उत्पन्न करैत अछि, आ ई भावना स्वतः हमरासभकेँ कैद कऽ लैत अछि। मनुष्य दुनिया के सर्वोत्तम कारण सं रोज अपना के कैद करैत अछि। सौभाग्यवश, सुकरात जे कहलखिन ओकर विपरीत, मनुष्य अपनाकेँ नहि जान सकैत अछि। अद्भुत, मनुष्यक दर्शन; अद्भुत, दर्शन, किएक तँ ओ मनुष्यकेँ ओतय पहुँचबाक औजार देलाक बिना, ओकरा की बनबाक चाहीं एकर आशा देबामे सफल भेल अछि।

दर्शन ठीक अछि, किएक तँ ई अहाँकेँ दोसर देबाक लेल एकटा दांत निकालैत अछि, मुदा चेतना आओर नीक अछि, किएक तँ ई दुनू दांत निकालैत अछि आ अहाँक लग कोनो नहि बचल अछि।

तँ एहि अवधिक अन्त धरि हम ई बुझबय चाहब जे मनुष्य बिना बुझने कोना अपनाकेँ हानि पहुँचाबैत अछि।

पहिल, मनुष्य अपना के हानि पहुँचाबैत अछि, किएक तँ ओ अपनाकेँ बुझबाक प्रयास करैत अछि। अपनाकेँ बुझबाक प्रयासमे ओ अपनाकेँ बुझबाक युक्ति तकबाक प्रयास करैत छथि आ अपनाकेँ बुझबाक युक्तिक खोजमे ओ अपन विषयमे अपन समझमे फँसि जाइत छथि, जाहिसँ ओ कहियो अपनाकेँ बुझबामे सफल नहि भऽ जाइत छथि।

आत्म-समझ मनुष्यक तरफ सँ एकटा तार्किक प्रयास अछि; ई एकटा एहन प्रयास अछि जकर मूल्य मनुष्यक स्कूलमे देल जाइत अछि। ई एकटा एहन प्रयास अछि जे मनुष्यक समाजमे प्रशंसनीय मानल जाइत अछि, मुदा मनुष्यक वास्तविकतामे ई एकटा असंभव प्रयास अछि। ई एकटा एहन प्रयास अछि जे लगातार आंशिक विफलताक कारण बनैत अछि, किएक तँ मनुष्य, अपनाकेँ बुझबाक प्रयासमे, स्वयंकेँ गलत सूचना देबाक प्रक्रियामे बाध्य भऽ जाइत अछि, आ अपनाकेँ गलत सूचना देबामे, ओ अपन विषयमे एकटा आओर भ्रम उत्पन्न करैत अछि, आदि।

मनुष्यकेँ अपनाकेँ जानबाक लेल, ओकरा अपन मस्तिष्ककेँ अपन सङ्ग रैक नहि करब सीखबाक चाही, आ जखन ओ ई सीखि लैत अछि तखन ओ अपन विरुद्ध प्रतिक्रिया देबय लगैत अछि, किएक तँ ओ देखय लगैत अछि जे कतऽ ओ अपनाकेँ बुझबाक प्रयास करबासँ पहिने ओ नहि कऽ सकल; आब अपन मस्तिष्क के अपना सं रैक नहि कए ओ अपना के अपन अज्ञानता मे देखय लगैत छथि।

आ धीरे-धीरे, अपन दिमागकेँ अपना सङ्ग नहि रैक करबासँ ओ अपन अज्ञानतामे अपनाकेँ अधिकाधिक देखैत छथि, आ समयक सङ्ग हुनका एहसास होबय लगैत अछि जे हुनकामे की कमी अछि; मुदा ओहि बिंदु पर, जँ ओ अपन भीतर जे कमी छैक ओकरा गम्भीरतासँ लैत छथि तँ ओ फेरसँ ओही खेल शुरू करैत छथि, मुदा अपन व्यक्तिगत खोजक बादक चरणमे।

मनुष्यक नव सूत्रमे, ओकरा अपन मस्तिष्ककेँ अपन सङ्ग रैक नहि करब सीखबाक चाही, बल्कि अपन जीवन जीबय आ देखबाक चाही जे ओ जे किछु करैत छथि ओ ओहि अनुभवक हिस्सा अछि जे हुनक स्पन्दनकेँ बदलबाक लेल जीबय पड़त। जँ ओ जागरूक भऽ जाइत अछि, जँ ओ दीवारक दोसर कातक बारेमे जानैत अछि, जकर प्रभाव ओकर रोजमर्रा के जीवन पर पड़ैत अछि, तखन ओ अपन मस्तिष्ककेँ रैक करबाक प्रयास नहि करत, ओ अपन मूर्खता, अपन गलतीसभकेँ जीबैत रहत, आ ई गलती धीरे-धीरे कम भऽ जायत।

हम पाछू कोना मे महिला के एकटा उदाहरण लेब, श्रीमती एक्स। श्रीमती एक्स एकटा अत्यधिक भावुक प्रकारक महिला छथि। एकटा महिला जे बहुत दिनसँ अपन स्थितिमे सुधार करबाक, अपन भीतरी स्थितिमे सुधार करबाक, अपन आन्तरिक स्थितिकेँ बुझबाक प्रयास कयने छथि।

ओ ओतय पहुँचबाक लेल अलग-अलग तरीका तकैत छलीह, मुदा चूँकि हुनकर भावना एतेक शक्तिशाली छल, हर बेर जखन ओ आगू बढ़ैत छलीह, हुनका लगैत छल जे ओ पाछू दिस बढ़ि रहल छथि, किएक तँ हर बेर जखन ओ आगू बढ़ैत छलीह, हुनका लगैत छल जे ओ बिल्कुल आगू नहि बढ़ल छथि।

आ तइयो हर बेर जखन हम आगू बढ़ैत छी, हम आगू बढ़ैत छी; हम जीवन मे कहियो पाछू नहि जाइत छी, ई अहंकार के भ्रम अछि। हम सभ जीवनमे हरदम आगू बढ़ैत छी, मुदा जे होइत अछि से ई होइत अछि जे हम ओतेक तेजीसँ आगू नहि बढ़ैत छी जतेक हम चाहैत छी; हम ओतेक तेजी सँ आगू नहि बढ़ैत छी जतेक दोसर व्यक्ति के हम सोचैत छी जे आगू बढ़ि रहल अछि, आ तखन ओ हमरासभ सँ बेसी तेजी सँ आगू नहि बढ़ैत अछि। तँ आन सभ सदखन हमरासभसँ बेसी तेजीसँ आगू बढ़ैत अछि, आ हममे सँ शेष सभ सदैव दोसरक तुलनामे धीरे-धीरे आगू बढ़ैत छी, ई अहंकारक भ्रम थिक।

तँ महिला आगू बढ़ैत छथि, मात्र अपन गतिसँ, ओ गति जे संभवतः हुनका लेल सबसँ नीक अछि, ओ गति जे हुनक भावनात्मक सन्तुलनक लेल, मानसिक सन्तुलनक लेल सबसँ नीक अछि। ई एतेक तेजीसँ आगू बढ़बाक प्रश्न नहि अछि जे अहाँ अपन आत्माकेँ तोड़ि दियो, ई मात्र आगू बढ़बाक प्रश्न अछि।

तँ जँ अहाँक लेल आगू बढ़बाक एकटा निश्चित लय अछि, तखन एकर मतलब ई नहि अछि जे अहाँक लेल आगू बढ़ब कोनो आन व्यक्तिक तुलनामे धीमा अछि, किएक तँ जे दर्शाबैत अछि, वा जे प्रगतिक लयकेँ नापैत अछि, ओ गति नहि अछि जाहिसँ अहाँ एक राज्यसँ दोसर राज्यमे जाइत छी, अपितु अहाँकेँ प्रसन्न रहबाक क्षमता, अपन विषयमे नीक अनुभव करबाक क्षमता नहि अछि। जतेक बेर अहाँ अपन विषयमे नीक अनुभव करैत छी, ओतेक बेसी अहाँ आगू बढ़ैत छी, ओतेक बेर अहाँ अपन विषयमे नीक अनुभव करैत छी, ओतेक बेसी आगू बढ़ैत छी। आ एतय अंगुठाक नियम अछि: जतेक बेसी अहाँ अपन विषयमे नीक अनुभव करब, अहाँ ओतेक आगू बढ़ब। दोसर शब्दमे, अहाँ अपन विषयमे जतेक बेसी नीक अनुभव करब, अहाँ ओतेक आगू बढ़ि गेलहुँ।

आ मनुष्यक लेल ई बुझब आवश्यक अछि जे ओकरा आब अपनाकेँ जानबाक प्रयास नहि करबाक चाही। ई मनुष्यक सोचमे एकटा पैघ क्रांति अछि। ई एकटा मोड़ अछि, जाहिसँ ओ अंततः आ प्रभावी रूपसँ अपनाकेँ पहिने जेना देखैत छलाह ओहिसँ एकदम अलग तरीकासँ देखबामे अग्रसर होइत छथि।

पहिने, ओ अपनाकेँ अपनाकेँ बदलबाक व्यक्तिगत प्रयासक सङ्ग देखैत छलाह जे कहियो किछु नहि उत्पन्न कयलक, आ आब हुनका अपनाकेँ बिना कोनो व्यक्तिगत प्रयासक देखय पड़ैत छैक जाहिसँ किछु भऽ जाय - ई नव निर्देशक कुंजी थिक।

एकटा आदमी जे बुझैत अछि जे ओकरा अपन मस्तिष्ककेँ रैक करबाक आवश्यकता नहि अछि ओ पहिनेसँ एकटा बुद्धिमान व्यक्ति अछि। ओ बुद्धिमान छथि किएक तँ ओ पहिनेसँ अपन खोजक लेल अहंकारक महान साहसिक कार्यकेँ अलग कऽ देने छथि, जे अहंकारक बौद्धिक साहसिक कार्य थिक, जकर वकालत पुरान लोकनि कयने छलाह आ यूनानी सुकरात द्वारा मनुष्यक दर्शनक सूचीमे अंकित छल। हमरा यूनानीसभक विरुद्ध किछु नहि भेटल अछि, मुदा ओ पश्चिमी मनुष्यक बौद्धिक आ दार्शनिक विकासक उत्पत्तिमे छल; इ हुनकर उद्देश्य के पूरा केलक, मुदा आइ कारण खतम भए गेल अछि।

मनुष्यकेँ फेरसँ अटलांटीयन बनबाक चाही, मुदा विकसित मानसिक शरीरक संग अटलांटीयन बनबाक चाही। आ एक बेर जखन हम एहि बात के दृढ़ता सँ बुझि लेलहुँ : अपना के मारय के लेल नहि, हम सांस लेबए लगैत छी। ई एतेक सरल अछि, ई मूर्खता अछि, मुदा बात ई जनबाक छल।

अहाँ मानवजातिक महान आविष्कारकेँ देखैत छी, आ अहाँ हरदम कहैत छी: ई जानबाक विषय छल।.. इ हरदम एक समान चीज होइत अछि। आ मानव अनुभवक प्रत्येक क्षेत्रमे, ई सदैव जानबाक विषयमे होइत अछि।

मुदा इ कतए सं अबैत अछि?

ई हरदम उपर सं अबैत अछि, आ अहाँ एकरा ताबत धरि नहि जनैत छी जाबत धरि समय नहि आबि जाइत अछि। आब इ समय अछि, आ इ तेजी सं चलि रहल अछि।

भौतिक तल पर अहंकारक सबसँ पैघ पुरस्कारमे सँ एक ई एहसास छैक जे जे किछु ओकरा पहिने भ्रमित करैत छल ओ आब ओकरा भ्रमित नहि कऽ सकैत छैक। किछु गोटे भीतरसँ बुझि सकैत छथि, किएक तँ जखन अहंकार आत्माक सरलताकेँ बुझबाक लेल पर्याप्त रूपसँ जागरूक होइत अछि, अपन अनुभवमे आ अपन अनुभवमे पर्याप्त रूपसँ संवेदनशील होइत अछि, तखन ओ ओहि क्षणसँ जीवनक अपन अवधारणाकेँ पूर्णतः बदलबाक आ पूर्णतः भिन्न तरीकासँ जानबामे सक्षम होइत अछि। जतय दोष देखलक, ओ गुण देखैत अछि, आ जतय गुण देखैत अछि, ओ किछु नहि देखैत अछि।

हम एहि पर वापस आबि जाएब : जतय ओ दोष देखलनि, ओ गुण देखैत छथि, आ जतय ओ गुण देखैत छथि, ओ किछु नहि देखैत छथि, किएक तँ दोषसँ गुणवत्ता, तटस्थता दिस प्रगति होइत अछि। आ अहाँ मे सं किछु इ सेहो बुझैत छी।

आ जखन अहंकार दोषक भ्रमकेँ मारबामे सफल भऽ जाइत अछि, तखन ओ गुणक भ्रमकेँ बुझबाक लेल तैयार भऽ जाइत अछि, आ ओ पहिनेसँ आत्म-तटस्थताक मार्गपर अछि, आ ओहि बिन्दु पर आब ओ अपन चिन्ता नहि कऽ रहल अछि। ओतय ओकरा एहसास होबय लगैत अछि जे ओ होशियार छथि, मुदा हुनका अपन आध्यात्मिक गौरवक माध्यमसँ एहसास नहि होइत अछि जे ओ चतुर छथि, मुदा हुनका एहसास होइत अछि जे ओ अपन सुपरामेंटल चेतनाक माध्यमसँ चतुर छथि।

आ तखन, ओ सुनिश्चित होबय लगैत अछि जे ओ होशियार अछि, तखन एकटा अहंकार जे सुनिश्चित होबय लगैत अछि जे ओ होशियार अछि, ओ बहुत होशियार होबय लगैत अछि; किछु एहन छथि जे बुझैत छथि जे हमर की मतलब अछि।

अहंकारक लेल ई आवश्यक अछि जे ओ एहि बोधक अनुभव एक बेर आ सदाक लेल अपन खोजकें समाप्त करबाक लेल करय, किएक तँ अपनाकें तकनाइ कष्ट अछि, आ ई जानब एतेक सरल अछि जे अहाँकें अपन खोज करबाक आवश्यकता नहि अछि, जे अहाँकें बस जे छी से जीबय पड़त, आ ई देखबाक लेल जे अहाँ जे छी ओ परिवर्तनक प्रक्रियामे अछि। परिवर्तन के।

एक बेर जखन अहाँ एकरा देखैत छी तखन अहाँक लग एहि बातक प्रमाण अछि जे अहाँ अपन आन्तरिक खोजमे जे छलहुँ से अहाँक आगू विकासमे आइ जे छी ओकर लेल आवश्यक छल। जहिना अतीत मे अहां मे सँ किछु गोटे अपना के टेढ़ देखैत छलहुँ, आइ अहां बेसी सँ बेसी सीधा महसूस करैत छी।

तखन की होइत अछि? अहंकार, जकरा अनुभवक आरम्भमे एहन निर्देश देल जाइत अछि, एहि निर्देशक सत्यक अध्ययनक शिकार होइत अछि:

की इ भए सकैत अछि जे हम ओतेक होशियार छी? की ओतेक होशियार भेनाइ संभव अछि? की इ संभव अछि जे अहां कोनो छेद मे छी? की ई महसूस करब संभव अछि जे अहां सही छी आ तखन अहां सही छी?

दोसर प्रश्न, अचानक ई गलत अछि, अचानक ई अस्थायी अछि, अचानक ई एकटा भ्रम अछि, अचानक ई एकटा सुझाव अछि।

तँ अहंकार दुनू प्रश्नक शिकार होइत अछि। अंततः कोनो प्रश्न नहि अछि; ई वैह अछि जे ई अछि, आ मापक एकमात्र नियम जे ई अछि ओ अछि अपन बारे मे नीक अनुभव केनाइ। परंच ई जानबाक प्रश्न छल, आ अहंकार एकरा अपने नहि जान सकैत अछि, किएक तँ अहंकार एकटा उपाय, एकटा औजार तकैत अछि, जाहिसँ या तँ अपनाकें बहुत सुधार भऽ सकय वा अपन व्यक्तित्वक गुणवत्तामे सुधार आबि सकय, आ अहंकार एकरा अपने नहि पाबि सकैत अछि किएक तँ अहंकार झूठक नियमक अधीन अछि। सभ बाधाक विपरीत, अपन संबंधमे एहि तथ्यसँ जे ओ सोचैत छथि, या कोनो आन स्तरक संबंधमे जे मात्र अपन पहियामे एकटा बातकें रखबाक प्रयास करैत अछि, एकरा विकसित करबाक लेल।

तँ अहंकार दोसर अहंकार तक पहुँचबाक लेल विवश भऽ जाइत अछि, जाहिमे शक्तिक विशेषाधिकार अछि, जे ओ जनैत अछि से जानबाक विज्ञान। आ ई दोसर अहंकार, जकर ई विशेषाधिकार छैक, कम्पन द्वारा, ग्रहणशील अहंकारमे पर्याप्त ऊर्जा उत्पन्न कऽ सकैत छैक, जाहिसँ बादवला कारणसँ अधिचेतन चेतनाक एहि नव सूत्रीकरणकें अस्वीकार करबामे असमर्थ भऽ सकैत छैक।

एहि लेल प्रायः जखन हम अहाँसँ गप्प करैत छी तखन अहाँक विचार सक्रिय नहि रहि जाइत अछि आ मानसिक शून्यमे हम जे कहैत छी से अहाँकें भेटैत अछि। आ जखन अहंकार सोचैत अछि जे ओ मनमे किएक खाली अछि, प्रश्न किएक नहि पूछि सकैत अछि, मनमे किएक किछु नहि आबि रहल अछि, जखन पहिने, दू घंटा पहिने, मनमे कतेको प्रश्न आबि रहल छल, एकर उत्तर ओतए अछि।

कंपन प्राप्तकर्तामे मानसिक शरीरकें बेअसर कऽ दैत छैक, आ तखन काज शुरू भऽ जाइत छैक, आ अहंकार अन्ततः ओहि चीजकें पूर्ण रूपसँ विकृत करब शुरू कऽ सकैत छैक जे ओ पहिने कतेको वर्षसँ नियमन करबाक प्रयास कऽ रहल छल, अर्थात् अपन व्यक्तिगत स्थिति, मुदा ई किछु नहि कऽ आ बस ऊर्जा प्राप्त कऽ एकरा विकृत कऽ दैत छैक।

जँ हम अपना के सुधारय चाहैत छी तऽ ई अहंकार के माध्यम सँ अछि। जँ हम अपना के आध्यात्मिक बनाबए के कोशिश करैत छी, त ई अहंकार के माध्यम सं अछि; जँ हम अपना के समझए के कोशिश करैत छी, ई अहंकार के माध्यम सं अछि।

जँ अहाँ किछु नहि तकनाइ सीखैत छी, अपन जीवन ओहि परिस्थितिमे जीबय सीखैत छी जे अहाँक अनुकूल अछि, तखन अहंकार स्वयं एहि बातक परावर्तक बनि जाइत अछि जे ओ काल्हि की होयत। आ आइ ई जे प्रतिबिम्बित करैत अछि ओ चेतना द्वारा पकड़ल जाइत अछि आ काल्हि, एक मासमे, दू मासमे, एकटा आओर कम्पनमे पुनर्प्रेषित होइत अछि जे अहंकारकें भेटत आ जे ओकरा दोसर अहंकार वा बेसी सूक्ष्म अहंकार, बेसी चेतन अहंकार, बेसी संतुलित अहंकार, बुद्धिमान अहंकार, बेसी स्थिर अहंकार बना देत।

जँ हम अहां सं कहैत छी: अपना के ओहिना लए जाउ जेना अहां छी, आ हम मिस्टर सं बात कए रहल छी। X, अपना के ओहिना लए जाउ जेना अहां छी। अहां के बेहोशी अहां के अपन असली महानता के जानबा सँ रोकेत अछि। जँ दुनियामे आन लोक छथि जे अहाँक सच्चा महानता देखि सकैत छथि, तखन अहाँकें अपन चिन्ता करबाक आवश्यकता नहि अछि, अहाँकें मात्र अपन दिशामे जयबाक अछि।